भाषा और साक्षरता

कक्षा में बहुभाषिकता

भारत में विद्यालय आधारित
समर्थन के माध्यम से
शिक्षक शिक्षा
www.TESS-India.edu.in

http://creativecommons.org/licenses/

संदेश

शिक्षकों को बाल केंन्द्रित कक्षा अभ्यास की ओर उन्मुख करने तथा शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्देश्यों को सम्मुख रखते हुए TESS-India राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत है। इस दिशा में TESS-India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources) का विकास किया गया है । ये संसाधन शिक्षकों तथा शिक्षक–प्रशिक्षकों के वृत्ति विकास (Professional development) में लाभकारी एवं उपयोगी सिद्ध होंगे। राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार के नेतृत्व में इन संसाधनों का स्थानीयकृत किया गया है, जिसके अन्तर्गत इनके उद्देश्य के मूल को बरकरार रखते हुए इनमें स्थानीय, भाषा, बोली, प्रथाओं, संस्कृतियों तथा नियमों को सम्मिलित किया गया है। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता एवं सुगमता पूर्वक किया जा सकता है ।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार के मार्गदर्शन में TESS-India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources) नेट पर आप सभी के लिए सुलभ उपलब्ध है ।

शुभकामनाओं सहित ।

(डॉ0 मुरली मनोहर सिंह)
निदेशक
एस0सी0ई0आर0टी0, बिहार

समीक्षा एवं दिशाबोध
डॉ. मुरली मनोहर सिंह, निदेशक राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. सैयद अब्दुल मोईन, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. क़ासिम खुर्शीद, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
डॉ. इम्तियाज़ आलम, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. स्नेहाशीष दास राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. अर्चना, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. रीता राय, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
श्री तेज नारायण प्रसाद, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

स्थानीयकरण
भाषा और शिक्षा
डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, प्राचार्य, मैत्रेय कॉलेज ऑफ एडुकेशन एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर, वैशाली
श्री सुमन सिंह, प्रखंड साधनसेवी, भगवानपुर हाट, सिवान
श्री कात्यायान कुमार त्रिपाठी, प्राथमिक विद्यालय चैलीटाल, पटना
श्री कृत प्रसाद, प्रखंड साधनसेवी, हिलसा, नालंदा
प्राथमिक अंग्रेज़ी
श्री अरशद रज़ा, सहायक शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय, पचासा रहुई, नालंदा
श्री संतोष सुमन, सहायक शिक्षक, बालिका उच्च विद्यालय, महुआबाग
श्री शशि भूषण पाण्डेय, सहायक शिक्षक, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, मुकुन्दपुर, नालंदा
श्रीमती रचना त्रिवेदी, शिक्षिका, नोट्रेडेम अकादमी, पटना
माध्यमिक अंग्रेज़ी
श्री मणिशंकर, प्रधानाध्यापक, तारामणी भगवानसाव उच्च माध्यमिक विद्यालय, कोइलवर, भोजपुर
डॉ. ब्रजेश कुमार, शिक्षक, पी. एन. एंग्लो संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, नया टोला, पटना
प्राथमिक गणित
श्री कृष्ण कान्त ठाकुर
श्री दिलीप कुमार, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, बुलनी हैदरपुर, नालंदा
श्री गोविन्द प्रसाद, प्रखंड साधनसेवी, चनपटिया, पश्चिमी चम्पारण
माध्यमिक गणित
डॉ. राकेश कुमार, भागलपुर डायट
श्री रिज़वान रिज़वी, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, सिलौटा चाँद, कैमूर
श्री इन्द्रभूषण कुमार, शिक्षक, सहयोगी माध्यमिक विद्यालय, हाजीपुर, वैशाली
प्राथमिक विज्ञान
श्री मनोज त्रिपाठी, प्रखंड साधनसेवी, बरहारा, भोजपुर
श्री शशिकान्त शर्मा, प्रखंड साधनसेवी, आरा, भोजपुर
श्री रणबीर सिंह, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, आदर्श आवासीय मध्य विद्यालय शिक्षक संघ, सहरसा
माध्यमिक विज्ञान
श्री जी.वी.एस.आर प्रसाद
श्री मुकुल कुमार, शिक्षक, सहायक शिक्षक, गोरखनाथ सूर्यदेव माध्यमिक विद्यालय, राजापाकर वैशाली

TESS-India (Teacher Education Through School Based Support) का लक्ष्य है भारत में मुक्त शैक्षिक संसाधनों के द्वारा प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों पर शिक्षकों के कक्षा अभ्यासों को बेहतर करना। ये संसाधन शिक्षकों के छात्र–छात्रा –केन्द्रित, भागीदारी दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायता करेंगे।

TESS-India के मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Education Resources – OERs) शिक्षकों को स्कूल की पाठ्यपुस्तक के लिए सहायक पुस्तिका प्रदान करते हैं। ये संसाधन शिक्षकों के लिए गतिविधियाँ प्रदान करते हैं जो वे कक्षा में अपने छात्र–छात्राओं के साथ कर सकते हैं। साथ ही इनमें केस स्टडी भी हैं जो ये दर्शाते हैं कि किस प्रकार दूसरे शिक्षकों ने उस विषय को सिखाया है। संबंधित संसाधन शिक्षकों को पाठ योजना बनाने में और विषय पर ज्ञान वर्धन करने में उनकी सहायता करते हैं।

TESS-India के मुक्त शैक्षिक संसाधन भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल हैं। ये *भारतीय तथा अतंर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार* किये गये हैं *और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट उपयोग के लिए उपलब्ध है (http://www.tess-india.edu.in)।* मुक्त शैक्षिक संसाधन अनेकों संस्करणों में उपलब्ध हैं जो प्रत्येक राज्य के लिए उपयुक्त है जहाँ TESS India कार्यरत है। उपयोगकर्ता इन संसाधनों को अनुकूल और स्थानीयकृत करने के लिए स्वतंत्र हैं ताकि ये स्थानीय आवश्यकताओं और संदर्भों को पूरा कर सकें।

TESS-India मुक्त विश्वविद्यालय, ब्रिटेन के नेतृत्व में तथा ब्रिटेन की सरकार द्वारा वित्त-पोषित है।

वीडियो संसाधन

इस इकाई की कुछ गतिविधियों के साथ निम्न प्रतीक का उपयोग किया गया है: *. इससे संकेत मिलता है कि निर्दिष्ट अध्यापन संबंधी थीम के लिए TESS-India वीडियो संसाधनों को देखना आपके लिए उपयोगी होगा।*

TESS-India वीडियो संसाधन भारत में अनेक प्रकार की कक्षाओं के संदर्भ में मुख्य अध्यापन तकनीकों का वर्णन करते हैं। हमें आशा है कि वे आपको इसी प्रकार के अभ्यासों के साथ प्रयोग करने के लिए प्रेरित करेंगे। उनका उद्देश्य पाठ (टेक्स्ट) पर आधारित इकाइयों के माध्यम से काम करने के आपके अनुभव का पूरक होना और उसे बढ़ाना है।

TESS-India वीडियो संसाधनों को ऑनलाइन देखा या TESS-India की वेबसाइट, http://www.tess-india.edu.in/ से डाउनलोड किया जा सकता है। वैकल्पिक रूप से, आप ये वीडियो सीडी या मेमोरी कार्ड के माध्यम से भी देख सकते हैं।

संस्करण 2.0 LL12v1
Bihar

तृतीय पक्ष सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन–शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है:
http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/

TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

यह इकाई उन कक्षाओं की उस वास्तविकता के बारे में है जहाँ छात्र–छात्राओं की मातृभाषा और विद्यालय की भाषा समान नहीं होती है। ऐसी परिस्थितियों को अक्सर चुनौतीपूर्ण माना जाता है। इस इकाई का उद्देश्य बहुभाषिकता के प्रति जागरूकता और सकारात्मक समझ को विकसित करना है, जिसके अंतर्गत यह बात बताई गई है कि बहुभाषिकता के माध्यम से भाषा की कक्षा में सभी छात्र–छात्राओं को एक साथ आसानी से सिखाया जा सकता है।

आप इस इकाई में सीख सकते हैं

- सीखने के संसाधन के रूप में अपने छात्र–छात्राओं के लिए बहुभाषिकता का उपयोग कैसे करें।
- अपने कक्षा शिक्षण में सभी छात्र–छात्राओं को उनकी भाषाओं में सीखने के अवसर उपलब्ध करने की योजना कैसे तैयार करें।
- कक्षा में 'भाषा अनुवाद' ('ट्रांसलैंग्वेजिंग') के लाभ।

यह पद्धति महत्त्वपूर्ण क्यों है

भारत सहित अधिकांश विश्व में बहुभाषी छात्र–छात्रा अपवाद नहीं बल्कि आदर्श हैं। एक से अधिक भाषा ज्ञान के संज्ञानात्मक और व्यावहारिक लाभ के कई शोध और प्रमाण हैं। इस प्रकार का ज्ञान अधिगम और सीखने–सिखाने का अद्भुत साधन है। चाहे कोई भी विषय हो, प्रत्येक शिक्षक को अपने सभी छात्र–छात्राओं के भाषा ज्ञान और कौशल की प्रशंसा करते हुए और उसे निखारने के अवसरों की तलाश करनी चाहिए। एक भाषा और साक्षरता शिक्षक होने के नाते, ऐसा करना आपकी विशेष ज़िम्मेदारी है। यह इकाई दर्शाती है कि यह कैसे संभव है।

1 बहुभाषी कक्षा का प्रारंभ

गतिविधि 1: मुख्य सिद्धांत

बहुभाषी प्रसंगों में प्रभावी कक्षा अभ्यासों के बारे में अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण अनुसंधान की खोज के आधार पर अनुसरित (follow up) होने वाले तीन कथन:

- छात्र–छात्रा उस भाषा में सर्वश्रेष्ठ ढंग से सीखते हैं जिसे वे सबसे अच्छी तरह जानते हैं।
- शिक्षक उस भाषा में सबसे प्रभावी ढंग से सिखाते हैं जिसमें उनकी सबसे अच्छी पकड़ होती है।
- प्रथम भाषा में जितना अधिक अध्यापन और शिक्षण होता है, शैक्षणिक परिणाम भी उतने ही बेहतर होते हैं।

अब संभव हो, तो किसी साथी के साथ चर्चा करके नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर दें:

- एक शिक्षक के रूप में, अपने दैनिक कक्षा अभ्यास के अंतर्गत उल्लेखित कथनों को एकीकृत करने में किस प्रकार की चुनौतियाँ सामने आती हैं?
- क्या आपकी कक्षा में आपके और आपके छात्र–छात्रा, या छात्र–छात्राओं के बीच आपस में 'भाषा अंतर' की समस्या है? ऐसा है तो:
  - यह आपके अध्यापन और उनके अधिगम को कैसे प्रभावित करता है?
  - यह कक्षा में संबंधों को कैसे प्रभावित करता है?
- क्या आप सीखने–सिखाने में अपने छात्र–छात्राओं की अन्य भाषाओं की स्वीकृति के लिए कुछ करते हैं? क्यों या क्यों नहीं?

उल्लिखित तीनों कथन उस सकारात्मक प्रभाव के उन्नत साक्ष्य को दर्शाते हैं जिसके अंतर्गत मातृभाषा में लंबे समय तक शिक्षण प्रदान करने से छात्र–छात्राओं की उपस्थिति और उनकी लंबे समय तक शैक्षणिक सफलता में महत्त्वपूर्ण वृद्धि होती है।

हो सकता है आपके विद्यालय में पूर्ण रूप से मातृभाषा आधारित शिक्षण संभव नहीं हो, फिर भी आप अपने शिक्षण अभ्यास में कई ऐसे छोटे–मोटे परिवर्तन ला सकते हैं जिससे कक्षा में आपके छात्र–छात्राओं द्वारा उपयोग की जाने वाली मातृभाषा के संसाधनों में वृद्धि की जा सके।

केस स्टडी 1: छात्र–छात्राओं का अवलोकन

बिहार के एक ग्रामीण विद्यालय में कक्षा 1 और 2 के शिक्षक, श्री सुमन बताते हैं कि अपने छात्र–छात्राओं को उनकी मातृभाषा में संवाद करते देख उन्हें कैसा लगा।

नवनियुक्ति के पश्चात् वर्ग 1 एवं 2 के शिक्षक की जवाबदेही मुझे मिली। विद्यालय सुदूर देहात में स्थित था। मेरी शुरूआती धारणा थी छात्र–छात्राओं से वर्गकक्ष में केवल हिन्दी में संवाद। प्रशिक्षण में सैद्धान्तिक रूप से पढ़ चुका था कि प्राथमिक कक्षाओं विशेषकर वर्ग 1 एवं 2 के संवाद का माध्यम मातृभाषा ही होगी लेकिन इसमें मेरा विश्वास नहीं था। मैं इसे भाषाओं की खिचड़ी समझता था जो छात्र–छात्राओं में भ्रम पैदा कर सीखने की दिशा में भटकाव उत्पन्न कर सकता था। मैंने छात्र–छात्राओं से हिन्दी में संवाद करना शुरू किया। लेकिन वर्ग के अधिकांश छात्र–छात्रा या तो चुप रहे या शोर मचाते रहे। मैं चिल्लाते हुए उन्हें डाँटता था; थोड़ी देर की खामोशी फिर शोर। मैं समझ नहीं पा रहा था आखिर इस शोर का कारण क्या है? अधिकांश छात्र–छात्राओं की रूचि न मुझमें थी न पढ़ने में। मैं सभी को औसत से ज्यादा कमज़ोर और शरारती समझ रहा था।

एक रोज़ मैंने ब्लैकबोर्ड पर एक वृक्ष का चित्र बनाया और कहा, 'आपलोग भी वृक्ष का चित्र अपनी कॉपी पर बनाइये'। तभी एक लड़का बोल पड़ा, 'माट साहेब ई गाछ हटे' (मास्टर साहब ये पेड़ है)। एकसाथ कई आवाज़ें आईं, 'हँ....हँ.... गाछ हटे' (हाँ, हाँ, पेड़ है)। मैं अवाक् रहा! जो अबतक कटे–कटे थे सिर्फ़ 'गाछ' शब्द के साथ एक–साथ खड़े हो गये वह भी पूरी सक्रियता के साथ मैंने परिस्थिति के मुताबिक तुरंत अपने को संभाला 'हँ....हँ....ई गाछ हटे' (हाँ, हाँ, यह पेड़ है)। छात्र–छात्राओं के चेहरे पर विजयी मुस्कान और मुझे सिद्धान्त को व्यवहारिक धरातल पर मिले प्रत्यक्ष ज्ञान से आत्म–संतुष्टि, दोनों एकदूसरे में समाहित हो गये। वर्गकक्ष जोशपूर्ण (vibrant) हो गया। संवाद उनकी मातृभाषा में शुरू हो चुका था। जिन्हें मैं कमज़ोर या शरारती समझ रहा था उनके समझ, संवाद और सक्रियता का कायल हो उठा। अक्सर चुप रहने वाले छात्र–छात्रा भी बातचीत के क्रम में स्थानीय मुद्दों या अवसरों की चर्चा बेबाकी के साथ करते दिखे। यह सब मातृभाषा का चमत्कार ही तो था!

ज़रा सोचिए

प्रत्येक दिन उन छात्र–छात्राओं को ध्यान से देखने और सुनने का समय निकालें जो वैसे तो कक्षा में शांत रहते हैं लेकिन अपनी मातृभाषा में एक दूसरे के साथ खुलकर बातें करते हैं। वे किस प्रकार के गुण और व्यवहार को प्रदर्शित करते हैं, जिनके बारे में शायद आपको पहले कभी नहीं पता था?

अब अपनी कक्षा की गतिविधियों में अपने सभी छात्र–छात्राओं को सम्मिलित करके संसाधन 1 पढ़ें।

वीडियोः सभी को शामिल करना

2 कक्षा में बहुभाषिकता को महत्त्व देना

गतिविधि 2: एक कक्षा भाषा सर्वेक्षण

अपनी कक्षा में एक भाषा सर्वेक्षण आयोजित करें। यह कार्य छात्र–छात्राओं के साथ उन भाषाओं के बारे में बातचीत करके प्रारंभ करें, जिन्हें आप जानते हैं, कुछ शब्दों को समझ सकते हैं, भाषा को धाराप्रवाह बोल या लिख सकते हैं। उन्हें यह समझाएँ कि आपने यह ज्ञान कहाँ से प्राप्त किया है, उदाहरण के लिए अपने माता–पिता या दादा–दादी से सीखा है, या उसे किसी विशेष स्थान पर रहकर सीखा है, अथवा विद्यालय में पढ़कर सीखा है।

चार्ट पेपर का उपयोग करें और एक बड़ी तालिका बनाएँ। बाईं ओर छात्र–छात्राओं के नाम और ऊपर दी गई भाषाओं की सूची के बाद अपना नाम लिखें। अपने छात्र–छात्राओं को यह बताने के लिए आमंत्रित करें कि वे कौन–सी भाषाएँ जानते हैं और चार्ट पर उनके अनुसार सही का चिह्न लगाएँ। कार्य पूर्ण होने पर सर्वेक्षण चार्ट कक्षा की दीवार पर लगाएँ।

अगर कोई छात्र–छात्रा सर्वेक्षण के दिन अनुपस्थित रहा हो तो उसके वापस आने पर उसे चार्ट को उद्यतन (अपडेट) करें। वर्ष के दौरान कक्षा में नामांकित होने वाले किसी नए छात्र–छात्रा के लिए निचले भाग पर अतिरिक्त पंक्तियों का प्रावधान रखें। हो सकता है कि आप प्रधानाध्यापक और अन्य कर्मचारियों के साथ सर्वेक्षण करना चाहें और उस जानकारी को भी शामिल करना चाहें।

अपने छात्र–छात्रा की आयु के आधार पर आप इस बात पर ध्यान देते हुए इस सर्वेक्षण को अधिक विस्तृत कर सकते हैं कि क्या वे उल्लिखित भाषाओं को समझते हैं, बोलते हैं, पढ़ या लिख लेते हैं।

ज़रा सोचिए

- क्या आपके छात्र–छात्रा अपने भाषा ज्ञान को साझा करते समय खुश थे?
- क्या आपको यह पता लगाने में किसी भी कठिनाई का सामना करना पड़ा कि आपके छात्र–छात्रा कौन–कौन सी भाषाएँ जानते हैं? अगर ऐसा था, तो वे कौन–कौन सी भाषाएँ थीं?
- आप अपने छात्र–छात्राओं के साथ फ़ॉलो–अप गतिविधि के रूप में क्या कर सकते थे?

निम्न–स्थिति वाली जातियों की भेदभावपूर्ण धारणाओं का मतलब यह हो सकता है कि कुछ छात्र–छात्रा इन समुदायों से संबंधित कुछ भाषाओं को जानने की 'सहमति' देने के लिए अनिच्छुक हों। इसलिए, इस गतिविधि में इस बात पर सकारात्मक रूप से ज़ोर देना ज़रूरी है कि विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों का ज्ञान आमतौर पर लोगों के जीवन में और खासकर कक्षा के लिए मूल्यवान होता है। अल्पसंख्यक वर्ग की भाषाओं के अपने खुद के ज्ञान के बारे में बात करें, उस स्थिति में भी अगर वह सीमित हो या उन्हें सीखने की आपकी इच्छा हो।

यह तथ्य कि भाषा और बोली के बीच का भेद अक्सर परिवर्तनीय रहता है या यह हो सकता है कि छात्र–छात्राओं को उन भाषाओं के नामों की जानकारी न हो जिन्हें वे बोलते हैं ये ऐसे अन्य कारण हैं जिनकी वजह से इस प्रकार के ज्ञान के बारे में सटीक जानकारी प्राप्त करने के लिए हमेशा चीज़ें स्पष्ट नहीं रहती हैं। इसलिए, आपके चार्ट को एक प्रारंभिक बिंदु के रूप में देखा जाना चाहिए, जिस जानकारी को छात्र–छात्राओं के सहयोग से समय समय पर संशोधित किया जाएगा।

केस स्टडी 2: स्थानीय भाषा के शब्दों का उपयोग करना

बिहार के निम्न केस स्टडी में, नालंदा के एक शिक्षक द्वारा यह वर्णन किया गया है कि उनके कुछ छात्र–छात्रा दीवार पर लगे वर्णमाला चार्ट पर दिए गए अक्षरों को सचित्र स्पष्ट करने के लिए उपयोग किए गए शब्दों से कैसे भ्रमित हो गए थे।

मेरे अधिकांश छात्र–छात्रा मगही भाषा बोलते हैं और जब वे पहली बार इस स्कूल में आए, तो उन्हें हिंदी के बहुत कम शब्दों के बारे में पता था। मैंने देखा कि कुछ छात्र–छात्रा कक्षा की दीवार पर लगे हिंदी वर्णमाला चार्ट में दिए गए चित्रों द्वारा दर्शाए गए शब्दों को गलत तरीके से बता रहे थे। उन्होंने 'गन्ना' (हिंदी भाषा का शब्द) की बजाय 'केतारी' ('गन्ना' के लिए मगही भाषा का शब्द) कहा। जब मैंने उनसे पूछा कि यह कौन सा अक्षर है, तो छात्र–छात्राओं ने मुझसे कहा कि यह 'क' है, जो कि 'गन्ना' के लिए हिंदी भाषा के पहले अक्षर 'ग' की बजाय मगही भाषा में 'केतारी' का पहला अक्षर था।

चित्र 1: गन्ना (केतारी) / *यह आपके छात्र–छात्राओं की मातृभाषा की वर्णमाला के कौन–से अक्षर को दर्शाता है?*

मैं जानता था कि हिंदी अक्षरों के नामों और उच्चारणों को ठीक से सिखाने के लिए मुझे अपने छात्र–छात्राओं की सहायता करनी थी, इसलिए मैंने मगही भाषा के शब्दों का उपयोग करते हुए एक वर्णमाला चार्ट तैयार किया। इस तरीके से वे हिंदी वर्णमाला के अक्षरों के उच्चारण को ज्यादा आसानी से सीख पाए। उसके बाद मैंने उन्हें हिंदी के चित्र सहित शब्दों को भी सीखने में उनकी सहायता की। इससे उन्हें अपने हिंदी शब्द संग्रह को तैयार करने में भी सहायता मिली।

यह केस स्टडी पढ़ने के बाद, अब निम्न दो गतिविधियों को आज़माएँ, जो आपकी कक्षा में बहुभाषिकता पर केंद्रित हैं।

गतिविधि 3: एक वर्णमाला चार्ट तैयार करना
क्या हिंदी वर्णमाला चार्ट को दर्शाने वाले शब्द चित्रों से कम उम्र के छात्र–छात्रा भ्रमित हो सकते हैं? उनकी मातृभाषा से उपयुक्त शब्द ढूँढें और एक ऐसी वर्णमाला चार्ट या पुस्तक तैयार करने के लिए उनका उपयोग करें जो आपके छात्र–छात्राओं को हिंदी अक्षर सिखाने में सहायता करें। अगर आप उनकी मातृभाषा से अच्छी तरह से परिचित नहीं हैं, तो उपयुक्त शब्दों के सुझाव के लिए सहकर्मियों, समुदाय के सदस्यों या स्वयं छात्र–छात्राओं से मदद लें। अपने छात्र–छात्राओं को उस चार्ट या पुस्तक में चित्र काटकर चिपकाने की गतिविधि में शामिल करें।

गतिविधि 4: अपनी कक्षा में बहुभाषी अभ्यास को शामिल करना

आप उन भिन्न–भिन्न भाषाओं को कैसे स्वीकार और महत्त्व दे सकते हैं, जिन्हें छात्र–छात्रा कक्षा में लेकर आते हैं?

विचारों की एक सूची बनाएं। प्रेरणा के लिए अपने सहकर्मियों से बात करें या उनकी कक्षाओं में जाएँ। अगले महीने अपनी कक्षा में लागू करने के लिए किसी एक को चुनें। कुछ सुझाव नीचे सूचीबद्ध किए गए हैं।

अभिवादन

अपने बहुभाषी छात्र–छात्राओं से कहें कि वे अपने सहपाठियों को अपनी मातृभाषा में अभिवादन करना सिखाएँ। दैनिक पूछताछ की प्रक्रिया विकसित करें, दिन की शुरुआत में आप अपने छात्र–छात्राओं का अभिवादन स्कूल की भाषा में करते हैं और फिर उनमें से प्रत्येक की मातृभाषा में, जिसमें उसी के अनुसार पूरी कक्षा अभिवादनों का एक–एक करके जवाब देती है। स्कूल की समाप्ति पर अलविदा कहते समय यही प्रक्रिया अपनाएँ।

लेबल लगाना

अपनी कक्षा की संसाधनों (जैसे कि खिड़की, दरवाज़ा, ब्लैकबोर्ड, अलमारी) पर हिंदी और अपने छात्र–छात्राओं की मातृभाषा, दोनों भाषाओं में लेबल लगाएँ। अलग–अलग भाषाओं में अंतर करने में सहायता हेतु अलग–अलग रंगों वाले पेन या कार्ड का उपयोग करें। अगर आपके बहुभाषी छात्र–छात्रा अपनी मातृभाषा में साक्षर हैं, तो वे स्वयं अनुवादित लेबल लिखने में सहायता कर सकते हैं।

बहुभाषी शब्द दीवार

अपने छात्र–छात्राओं की मातृभाषा में उपयोगी शब्दों और अभिव्यक्तियों (उदाहरण के लिए, 'नमस्कार', 'अलविदा', 'क्षमा करें', 'आपका धन्यवाद') को पोस्ट करके अपनी कक्षा में एक विकासशील शब्द दीवार बनाएँ। नए शब्दों का योगदान करने के लिए, अपने छात्र–छात्राओं को हेतु अवसर की तलाश करें। उपरोक्त लेबल की तरह, भाषाओं में अंतर करने के लिए अलग–अलग रंगों वाले पेन या कार्ड का उपयोग करें।

बहुभाषी पठन सामग्री

उन भाषाओं में पुस्तकों, पत्रिकाओं, लघुपत्रों और अन्य पठन सामग्री का संग्रह प्रारंभ करें, जिन्हें आपके छात्र–छात्रा बोलते हैं और इन्हें अपने पठन कोने में शामिल कर दें (चित्र 2)।

चित्र 2: पठन कोने में मौजूद विभिन्न प्रकार की पठन सामग्री।

बहुभाषी शब्दकोष

अपने छात्र–छात्राओं को द्विभाषीय या बहुभाषी शब्दकोष तैयार करने की गतिविधि में शामिल करें। आपके छात्र–छात्राओं की ज़रूरतों पर निर्भर करते हुए, ये शब्दकोष आसान शब्दों और चित्रों, रोज़मर्रा के विषयों (जैसे स्कूल, घर, पार्क, शरीर के अंग, जानवर आदि) से संबंधित शब्दसंग्रह या विषय–विशेष शब्दों (उदाहरण के लिए, गणित, विज्ञान और पर्यावरण विज्ञान से संबंधित) पर केंद्रित हो सकते हैं।

अगर आपके छात्र–छात्रा अंग्रेज़ी का अध्ययन कर रहे हैं, तो वे एक ऐसा बहुभाषी शब्दकोष संकलित कर सकते हैं, जिसमें शब्दों को अंग्रेज़ी, हिंदी और उनकी मातृभाषा में सूचीबद्ध किया गया हो। उन शब्दकोषों को ऐसी जगह पर रखें जहाँ से आपके सभी छात्र–छात्रा उनका उपयोग कर सकें। नए शब्दों की एक सूची तैयार करें और अपने छात्र–छात्राओं के लिए कुछ समय निर्धारित करें ताकि वे नियमित रूप से इन और अन्य शब्दों को उस शब्दकोष में शामिल कर सकें।

3 कक्षा में भाषा अनुवाद

'भाषा अनुवाद' तुलनात्मक रूप से पुराने अभ्यास के लिए एक नया शब्द है – जिसमें ऐसी भाषाओं, जिनके बारे में किसी को जानकारी हो, को दूसरी भाषा में बदला जाता है, ताकि संवाद की संभावना को अधिकतम किया जा सके। भाषा अनुवाद एक लचीला बहुभाषावाद है। एक ही उच्चारण में चाहे इसमें भिन्न–भिन्न भाषाओं के संयोजन तत्व शामिल हों या नहीं ('कोड–स्विचिंग') या किसी कार्य के भिन्न–भिन्न हिस्सों में भाषाओं के बीच अदला–बदली करना, यह किसी व्यक्ति के भाषायी संसाधनों को उनके सर्वोत्तम प्रभाव के साथ उपयोग करने का एक प्राकृतिक माध्यम है। यह इसलिए उत्पन्न होता है, क्योंकि व्यक्ति किसी कथित भाषा को किसी विशिष्ट कार्य, विषय या परिस्थिति से संबद्ध कर देते हैं या कुछ अवधारणाएँ (जैसे कि 'इंटरनेट') सामान्यतः किसी भाषा विशेष में अधिक व्यक्त की जाने वाली समझी जाती हैं अन्यथा यह मनोरंजक और मजाकिया हो सकता है। भाषा अनुवाद ऐसी चीज़ है जिसका उपयोग अधिकांश लोग, यहाँ तक कि इसके बारे में कुछ सोचे बिना, अपने मित्रों, परिवार और समुदाय के अन्य सदस्यों के साथ हर समय करते रहते हैं।

कक्षा में, भाषा अनुवाद में निम्न शामिल हो सकते हैं:

- भाषाओं के बीच अनुवाद करना
- भिन्न–भिन्न भाषाओं के साथ तुलना करना और आनंदित बने रहना
- बोले और लिखे जाने वाले समान उच्चारण में भिन्न–भिन्न भाषाओं के शब्दों और अभिव्यक्तियों को मिश्रित करना
- किसी गतिविधि के एक हिस्से में मातृभाषा का उपयोग करना और दूसरे हिस्से में स्कूल की भाषा का उपयोग करना।

इस प्रकार, छात्र–छात्रा जानकारी को एक भाषा में सुन सकते हैं और उसके भावार्थ को दूसरी भाषा में मौखिक रूप से समझा सकते हैं या उसके लिखित नोट बना सकते हैं। इसी प्रकार वे एक भाषा में कोई पाठ्य पढ़ सकते हैं और दूसरी भाषा में उसके बारे में बात कर सकते हैं या उसका सारांश कर सकते हैं।

शिक्षकों और छात्र–छात्राओं, दोनों के लिए एक संसाधन के रूप में भाषा अनुवाद के कई शैक्षणिक लाभ हैं, क्योंकि यहः

- बहुभाषिकता को, किसी समस्या की बजाय ताकत के रूप में देखने हेतु या शुरूआती सीखने–सिखाने के समय एक अस्थायी सहभागिता वाले उपकरण को मान्य बनाता है
- केवल एक भाषा में संभावित तकनीक की तुलना में एक से अधिक कुशल और प्रभावी शिक्षण और सीखने के तकनीक को प्रस्तुत करता है
- स्कूल के अंदर और बाहर उपयोग हेतु समृद्ध और विविध संप्रेषणीय भंडार विकसित करने के लिए, व्यक्तियों को अवसर प्रदान करता है।

केस स्टडी 3: कक्षा में भाषा अनुवाद

श्रीमती इंद्रा, भोपाल से बाहर के एक ग्रामीण स्कूल की कक्षा 4 की अध्यापिका, यह बताती हैं कि उन्होंने अपनी भाषा

के अध्यायों में भाषा अनुवाद को शामिल करने की शुरुआत कैसे की है।

मेरे अधिकांश छात्र–छात्राओं की पहली भाषा हिंदी नहीं है। चूँकि मैंने तीन महीने पहले उनकी भाषा के अध्यायों में उनके भाषा अनुवाद अभ्यासों को सम्मिलित करने की शुरुआत की, इसलिए अब वे अपने शिक्षण में और भी अधिक बहुभाषी हो गए हैं और जुड़ चुके हैं। हिंदी भाषा में भी उनका आत्मविश्वास काफ़ी हद तक बेहतर हुआ है। मैंने यह देखा है कि मेरी कक्षा के एकभाषी हिंदी वक्ताओं ने अपने सहपाठियों के शब्दों और वाक्यों को भी अपनाना शुरू कर दिया है।

अगर मेरे छात्र–छात्रा अपनी हिंदी पाठ्यपुस्तिका के किसी अंश या पृष्ठ को पढ़ने जा रहे हों, तो मैं उस विषय के परिचय के साथ शुरुआत करती हूँ, अपने उन छात्र–छात्राओं को आमंत्रित करती हूँ, जिसे उस विषय के बारे में उन्हें कुछ भी पता है खुद से बताएँ और उन्हें प्रोत्साहित करती हूँ कि वे मुख्य हिंदी शब्द संग्रह को अपनी मातृभाषा में अनुवादित करें। अगर मुझे उनकी बातें समझ नहीं आती हैं, तो मैं उनसे अपनी सहायता करने के लिए कहती हूँ।

उसके बाद मैं, अपने छात्र–छात्राओं से जोड़ों में या छोटे–छोटे समूहों में अपनी हिंदी पाठ्यपुस्तिका के किसी अंश या पृष्ठ को ज़ोर या उन्हें खुद से धीरे–धीरे या मुक्त रूप से पढ़ने के लिए कहती हूँ। किसी भी स्थिति में, मैं प्रत्येक पृष्ठ या अंश की समाप्ति पर रुकने के लिए कहती हूँ और उन लोगों ने जो पढ़ा है, उसमें से सभी अपरिचित शब्दों का मतलब निकालते हुए और उनका अर्थ समझाते हुए, उसे अपने भागीदार या अन्य समूह के सदस्यों के साथ चर्चा करने के लिए कहती हूँ। मैं उन्हें सुझाव देती हूँ कि वे इसके लिए अपनी मातृभाषा का उपयोग करें। मैं उन्हें उनके द्वारा निर्मित शब्दकोष में सभी नए शब्दों या अभिव्यक्तियों को शामिल करने के लिए प्रोत्साहित करती हूँ।

अगर मैं यह चाहूँ कि छात्र–छात्राओं के जोड़े या समूह बाकी कक्षा के सामने स्कूल की भाषा में कुछ प्रस्तुत करें, तो मैं उन्हें सबसे पहले यह चर्चा करने के लिए अपनी भाषा का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करती हूँ, कि वे अपने विचारों को कैसे व्यक्त करेंगे। अगर मैं उनसे स्कूल की भाषा में कोई सारांश या रिपोर्ट लिखवाना चाहूँ, तो मैं ऐसा ही करती हूँ।

अपने सभी छात्र–छात्राओं की दिलचस्पी को कायम रखने के लिए, मैं यह सुनिश्चित करते हुए, जोड़ों और समूहों की व्यवस्था में अंतर करने का प्रयास करती हूँ, कि वे हर बार समान मातृभाषा के कम से कम दो छात्र–छात्राओं को शामिल करें। कभी–कभी मैं स्कूल की भाषा में समान क्षमता वाले छात्र–छात्राओं को एक साथ रखती हूँ। बाकी समय मैं आत्मविश्वास से भरे छात्र–छात्रा को कम आत्मविश्वासी छात्र–छात्रा के साथ रखती हूँ, ताकि मातृभाषा साझा करने में पुराने छात्र–छात्रा, नए छात्र–छात्रा की मदद कर सकें। अगर उस समूह में कोई ऐसा छात्र–छात्रा है, जो साझा मातृभाषा नहीं बोलता है, तो मैं यह सुनिश्चित करती हूँ, कि मेरे छात्र–छात्रा जो भी चर्चा कर रहे हों, उसे स्कूल की भाषा में अनुवादित कर लें।

हाल ही में मैंने एक ऐसी पारंपरिक लघु कहानी प्रस्तुत की, जो हिंदी और मेरे छात्र–छात्राओं की मातृभाषा में उपलब्ध थी। मैंने इसका उपयोग अपनी कक्षा VII के छात्र–छात्राओं के साथ किया। मैंने हर भाषा में इन कहानियों की प्रतिलिपियाँ तैयार की और छात्र–छात्राओं के छोटे–छोटे समूहों द्वारा उन्हें एक साथ पढ़वाया। उसके बाद मैंने उन्हें दो कहानियों के भिन्न–भिन्न संस्करणों की तुलना करने के लिए, प्रत्येक में प्रयुक्त मुख्य शब्दों सहित, अपनी मातृभाषा का उपयोग करने के लिए कहा।

चित्र 3: छात्र–छात्रा अपनी मातृभाषा का उपयोग करके जोड़ों में किसी विषय की चर्चा करते हैं।

ज़रा सोचिए

- ध्यान दें कि श्रीमती इंद्रा ने अपने छात्र–छात्राओं को इन गतिविधियों के किन–किन हिस्सों का अपनी मातृभाषा में और किन–किन हिस्सों का स्कूल की भाषा में उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया? क्या यहाँ उनका कोई पैटर्न दिया गया है?
- इस केस स्टडी में वर्णित भाषा अनुवाद अभ्यासों का समर्थन करने के लिए, श्रीमती इंद्रा ने किन–किन निर्देशों का पालन किया होगा? आप जिनके बारे में सोच सकते हैं, उनकी एक सूची बनाएँ।

यहाँ कुछ संभावनाएँ दी गई हैं:

- 'हिंदी में हम xxx कहते हैं, [आपकी मातृभाषा] में yyy कहते हैं।'
- 'आप [आपकी मातृभाषा] में xxx को क्या कहते हैं?'
- 'इस विषय से संबंधित [मातृभाषा] के कौन–कौन से शब्दों के बारे में आपको पता है?'
- 'जोड़ों में कार्य करें। एक छात्र–छात्रा ने कहा कि हिंदी के शब्द का मतलब, [अपनी मातृभाषा] में कुछ और होता है। उसके बाद, उन्हें परिवर्तित करें।'
- 'मैं' हिंदी में एक प्रश्न पूछने जा रही हूँ। आप उसका उत्तर [अपनी मातृभाषा] में दे सकते हैं।'
- 'आप [अपनी मातृभाषा] में शुरुआत करते हुए, हिंदी में जारी रख सकते हैं।'
- 'आप अपने जोड़ों [या समूहों] में इस विषय की चर्चा करने के लिए, [अपनी मातृभाषा] का उपयोग कर सकते हैं और उसके बाद कक्षा में अपनी रिपोर्ट वापस हिंदी में दे सकते हैं।'
- 'अब हमारे पास [अपनी मातृभाषा] में प्रश्न पूछने के लिए कुछ समय है।'
- 'अपनी नोटबुक में नए शब्दों की एक सूची बनाएँ। बाईं ओर हिंदी शब्द लिखें और उसके समान कोई शब्द [मातृभाषा] में दाईं ओर लिखें।'

(सिंपसन, 2014 से लिया गया)

गतिविधि 5: आपकी कक्षा में भाषा अनुवाद को सम्मिलित करना
किसी ऐसे आगामी भाषा अध्याय का पता लगाएँ, जिसमें आप अपने कक्षा अभ्यास में भाषा अनुवाद को प्रस्तुत कर सकते हैं। उस प्रत्येक गतिविधि को नोट कर लें, जिसमें स्कूल की भाषा का या छात्र–छात्राओं की मातृभाषा का उपयोग सबसे उचित रहेगा। विचार करें कि अपने छात्र–छात्राओं के जोड़े या समूह कैसे बनाएँ। सीखने की योजना बनाना, निर्देशात्मक वाक्यों की समीक्षा करना और उनका अभ्यास करना (ऊपर देखें)। अगर संभव हो तो अपने सहकर्मी के साथ अपनी योजना साझा करें। जब आप तैयार हो जाएँ, तो अध्याय को शुरू करें। अपने छात्र–छात्राओं को यह समझाते हुए शुरुआत करें कि भाषा अनुवाद के क्या–क्या लाभ हैं और आप उन्हें ऐसा करने के लिए क्यों प्रोत्साहित करना चाहते हैं। इस गतिविधि के प्रत्येक चरण के लिए, उन्हें स्पष्ट निर्देश दें। उनकी मातृभाषा के उपयोग के लिए, सहयोग के तौर पर जवाब दें।

हो सकता है आपको मुख्य संसाधन 'सीखने की योजना' पढ़ना मददगार लगे।

वीडियो: सीखने की योजना

ज़रा सोचिए

- कक्षा में आपके छात्र–छात्राओं ने भाषा अनुवाद के शुरुआती अनुभवों के प्रति कैसी प्रतिक्रिया दी?
- आपके लिए यह अनुभव भिन्न कैसे था?

जब आप अपने शिक्षण अभ्यास में भाषा अनुवाद का परिचय कराते हैं तो इसे अपने पाठों में लगातार शामिल करना महत्त्वपूर्ण है ताकि आपके छात्र नियमित आधार पर अपने अधिगम में अपनी मातृभाषा के उपयोग की स्वीकार्यता के लिए विश्वास हासिल कर सकें।

4 सारांश

इस इकाई में बहुभाषिकता के उपयोग के तरीकों पर चर्चा की गई है जिन्हें आपको और आपके छात्र–छात्राओं को शिक्षण, अधिगम और समावेशन के संवर्धन के लिए विद्यालय में लेकर आना है। इसने आपको कक्षा भाषा सर्वेक्षण आयोजित करने, बहुभाषीय कक्षा परिवेश का निर्माण करने एवं भाषा पाठों में भाषा अनुवाद गतिविधियों को शामिल करने के लिए प्रोत्साहित किया है। इस प्रकार के निरंतर अभ्यास का आपके छात्र–छात्राओं के सामाजिक, संज्ञानात्मक और अभिव्यक्ति के विकास पर स्थायी सकारात्मक प्रभाव हो सकता है।

संसाधन

संसाधन 1: सभी को शामिल करना

'सभी को शामिल करें' का क्या अर्थ है?

संस्कृति और समाज की विविधता कक्षा में प्रतिबिंबित होती है। छात्र–छात्राओं की भाषाएं, रुचियां और योग्यताएं अलग–अलग होती हैं। छात्र विभिन्न सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमी से आते हैं। हम इन विभिन्नताओं को अनदेखा नहीं कर सकते हैं; वास्तव में हमें उन्हें सकारात्मक रूप से देखना चाहिए क्योंकि हमारे लिए ये एक दूसरे के बारे में तथा हमारे अनुभवों से परे के संसार को जानने और समझने के लिए माध्यम का काम कर सकते हैं। सभी छात्र–छात्राओं को शिक्षा प्राप्त करने एवं अपनी स्थिति, योग्यता और पृष्ठभूमि से इतर जाकर सीखने का अवसर हासिल करने का अधिकार है, और इस बात को भारतीय कानून में एवं अंतर्राष्ट्रीय बाल अधिकारों में मान्यता प्राप्त है। 2014 में राष्ट्र के नाम अपने

पहले संबोधन में, प्रधानमंत्री मोदी ने भारत के सभी नागरिकों के मूल्यों, मान्यताओं को महत्त्व दिए जाने पर बल दिया भले ही किसी नागरिक की जाति, लिंग या आय कुछ भी क्यों न हो। इस संबंध में विद्यालयों और अध्यापकों की बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

हम सभी के पास उन दूसरे लोगों को लेकर पूर्वाग्रह और विचार होते हैं जिनसे हमारा परिचय या साक्षात्कार नहीं हुआ होता। एक अध्यापक के रूप में, आपके पास प्रत्येक छात्र के शैक्षिक अनुभव को सकारात्मक या नकारात्मक ढंग से प्रभावित करने की शक्ति होती है। चाहे जानबूझकर हो या अनजाने में, आपके निहित पूर्वाग्रहों और विचारों का इस बात पर अवश्य प्रभाव होगा कि आपके छात्र कितनी बराबरी के साथ सीख रहे हैं। आप अपने छात्र–छात्राओं को असमान व्यवहार से सुरक्षित करने के लिए कदम उठा सकते हैं।

आपके द्वारा अधिगम में सभी को शामिल करना सुनिश्चित करने के लिए तीन प्रमुख सिद्धांत

- **ध्यान देना:** प्रभावी अध्यापक चौकस, अनुभवी एवं संवेदनशील होते हैं; वे अपने छात्र–छात्राओं में होने वाले बदलावों पर *ध्यान* देते हैं। यदि आप चौकस हैं तो आप उन बातों पर ध्यान देंगे जब एक छात्र कुछ अच्छा करता है, जब उसे सहायता की आवश्यकता होती है और जब वह दूसरों के साथ जुड़ता है। आप अपने छात्र–छात्राओं में होने वाले परिवर्तनों का भी अनुभव कर सकते हैं जो उनकी घरेलू परिस्थितियों या अन्य समस्याओं के चलते प्रतिबिंबित हो सकते हैं। सभी को शामिल करने के लिए दैनिक रूप से अपने छात्र–छात्राओं पर, खास तौर पर उपेक्षित या प्रतिभागिता करने में असमर्थ महसूस कर सकने वाले छात्र–छात्राओं पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है।
- **आत्मसम्मान पर ध्यान केंद्रित करना:** अच्छे नागरिक वे होते हैं जो अपने स्वत्व को लेकर सहज होते हैं। उनमें आत्मसम्मान की भावना होती है, उन्हें अपनी शक्तियों और कमजोरियों का पता होता है और उनमें व्यक्तियों की पृष्ठभूमि के प्रति पूर्वाग्रह रखे बिना सकारात्मक संबंध स्थापित करने की योग्यता होती है। वे स्वयं का और दूसरों का सम्मान करते हैं। एक अध्यापक के रूप में, आपका युवा छात्र–छात्राओं के आत्मसम्मान पर महत्वपूर्ण प्रभाव हो सकता है; अपनी इस शक्ति के बारे में जानें और प्रत्येक छात्र के अंदर आत्मसम्मान विकसित करने के लिए उसका प्रयोग करें।
- **लचीलापन:** यदि कोई विधि या गतिविधि आपकी कक्षा में किसी विशिष्ट छात्र, समूह या व्यक्ति के लिए काम नहीं कर रही है तो अपनी योजनाओं में बदलाव करने या गतिविधि को रोकने के लिए तैयार रहें। लचीली दृष्टि रखने से आप समायोजन करने में सक्षम होंगे जिससे आप अधिक प्रभावी ढंग से सभी छात्र–छात्राओं को सहभागी बना सकते हैं।

हर समय आपके द्वारा अपनाए जा सकने वाले दृष्टिकोण

- **अच्छा व्यवहार प्रस्तुत करना:** जातीयता, धर्म या लिंग का भेदभाव किए बिना अपने छात्र–छात्राओं के साथ अच्छे ढंग से व्यवहार कर उनके सामने आदर्श प्रस्तुत करें। सभी छात्र–छात्राओं के साथ सम्मानजनक व्यवहार करें और अपने शिक्षण के माध्यम से यह बात स्पष्ट करें कि आप सभी छात्र–छात्राओं को एक समान महत्त्व देते हैं। उन सभी के साथ सम्मान से बात करें, उनके विचार उपयुक्त होने पर उसे महत्त्व दें और उन्हें सभी के लिए लाभप्रद कार्य करने हेतु कक्षा के लिए जिम्मेदारी उठाने को प्रोत्साहित करें।
- **अधिक उम्मीदें:** योग्यता सीमित नहीं होती है; यदि छात्र–छात्राओं को उचित सहायता मिले तो वे सीख सकते हैं और प्रगति कर सकते हैं। यदि किसी छात्र को आपके द्वारा कक्षा में की जा रही गतिविधि समझने में मुश्किल हो रही है तो ऐसा न समझें कि वे अब कभी भी जान और समझ नहीं सकते। एक अध्यापक के रूप में आपकी भूमिका बेहतरीन ढंग से प्रत्येक छात्र–छात्रा को सीखने में मदद करने की होनी चाहिए। यदि आप अपनी कक्षा के प्रत्येक छात्र से अधिक उम्मीद करते हैं तो आपके छात्र–छात्राओं में यह प्रबल धारणा बन सकती है कि यदि

वे डटे रहते हैं तो अधिक सीखेंगे। अधिक उम्मीदें व्यवहार में भी दिखनी चाहिए। सुनिश्चित करें कि उम्मीदें स्पष्ट हैं और छात्र एक दूसरे से सम्मानजनक व्यवहार करते हैं।

- **अपने शिक्षण में विविधता लाएं:** छात्र अलग अलग तरीकों से सीखते हैं। कुछ छात्र–छात्राओं को लिखना पसंद होता है; तो कुछ अन्य को अपने विचार निरूपित करने के लिए माइंड मैप या चित्र बनाना अच्छा लगता है। कुछ छात्र अच्छे श्रोता होते हैं; कुछ अन्य तब सर्वश्रेष्ठ ढंग से सीखते हैं जब उन्हें अपने विचार के बारे में बात करने का अवसर प्राप्त होता है। आप हर समय सभी छात्र–छात्राओं के अनुरूप नहीं कर सकते हैं लेकिन आप अपने शिक्षण में विविधता पैदा कर सकते हैं और छात्र–छात्राओं को उनके द्वारा किए जा सकने के लिए कुछ अधिगम गतिविधियों में से अपना विकल्प चुनने का अवसर दे सकते हैं।
- **रोजमर्रा की जिंदगी से अधिगम को जोड़ें:** कुछ छात्र–छात्राओं को वे बातें अपने रोजमर्रा की जिंदगी के लिए अप्रासंगिक लग सकती हैं जिन्हें आप उनसे सीखने के लिए कहते हैं। आप इसे यह सुनिश्चित करने को कह सकते हैं कि जब भी संभव हुआ आप उस अधिगम को उनके लिए प्रासंगिक संदर्भ से जोड़ कर दिखाएंगे और आप उनके खुद के अनुभव से उदाहरण द्वारा निरूपित करेंगे।
- **भाषा का उपयोग:** अपने द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा को लेकर सचेत रहें। सकारात्मक और प्रशंसात्मक भाषा का प्रयोग करें, छात्र–छात्राओं का उपहास न उड़ाएं। हमेशा उनके व्यवहार पर टिप्पणी करें, न कि स्वयं उन पर। 'तुम मुझे आज परेशान कर रहे हो' जैसे वाक्य बेहद व्यक्तिगत प्रकार के होते हैं, इसके बजाय आप इसे 'आज मुझे तुम्हारा व्यवहार कष्टप्रद लग रहा है। क्या कोई कारण है जिसके चलते ध्यान केंद्रित करने में तुम्हें मुश्किल हो रही है?' के रूप में बेहतर ढंग से व्यक्त कर सकते हैं।
- **रूढ़िवादिता को चुनौती दें:** उन संसाधनों का पता लगाएं और प्रयोग करें जो लड़कियों को गैर–रूढ़िवादी भूमिकाओं में प्रस्तुत करता है या वैज्ञानिक आदि अनुकरणीय महिलाओं को विद्यालय में आने के लिए निमंत्रित करें। लिंग को लेकर आप अपनी खुद की रूढ़िवादिता के प्रति सचेत रहें; आप जानते हैं कि लड़कियां खेलकूद के क्षेत्र में भी भाग लेती हैं वहीं लड़के देखभाल वाले कार्यों में भी पाए जाते हैं, लेकिन प्रायः हम इन्हें अलग ढंग से व्यक्त करते हैं, क्योंकि हम इसी तरीके से समाज में बात करने के अभ्यस्त होते हैं।
- **एक सुरक्षित, सुखद अधिगम वातावरण का निर्माण करें:** यह जरूरी है कि सभी छात्र विद्यालय में सुरक्षित और प्रसन्नचित्त महसूस करें। आप ऐसी स्थिति में होते हैं जिसमें आप अपने छात्र–छात्राओं को एक दूसरे के लिए परस्पर सम्मान और मित्रतापूर्ण व्यवहार के लिए प्रोत्साहित कर प्रसन्नचित्त महसूस करा सकें। इस बात पर विचार करें कि अलग अलग छात्र–छात्राओं के लिए विद्यालय और कक्षा को किस तरह विशिष्ट बनाया जा सकता है। इस बारे में सोचें कि उन्हें कहां बैठने के लिए कहा जाना चाहिए और सुनिश्चित करें कि दृश्य या श्रवण बाधा या शारीरिक अक्षमता वाला कोई भी छात्र अपना पाठ पढ़ने और सीखने के लिए कहां बैठ सकता है। इस बात की जांच करें कि शर्मीले स्वभाव या आसानी से विचलित होने वाले छात्र–छात्राओं को आप किस तरह आसानी से अपनी गतिविधियों में शामिल कर सकते हैं।

विशिष्ट शिक्षण दृष्टिकोण

ऐसे कई विशिष्ट दृष्टिकोण हैं जिनसे आपको सभी छात्र–छात्राओं को शामिल करने में मदद मिलेगी। इन्हें अन्य प्रमुख संसाधनों में और अधिक विस्तार से वर्णित किया गया है लेकिन यहां संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है:

- **प्रश्न पूछना:** यदि आप छात्र–छात्राओं को हाथ खड़े करने के लिए कहते हैं तो वही छात्र जवाब देने को प्रवृत्त होते हैं। ऐसे कई अन्य तरीके भी हैं जिनसे जवाबों के बारे में सोचने और प्रश्नों पर प्रतिक्रिया देने के लिए अधिक छात्र–छात्राओं को शामिल किया जा सकता है। आप विशिष्ट छात्र–छात्राओं से प्रश्न पूछ सकते हैं। कक्षा से कहें कि आप यह निर्णय लेंगे कि कौन उत्तर देगा, फिर आप सामने बैठे हुए छात्र–छात्राओं की अपेक्षा कक्षा में पीछे या किनारे में बैठे छात्र–छात्राओं से प्रश्न पूछें। छात्र–छात्राओं को 'सोचने के लिए समय' दें और विशिष्ट छात्र–छात्राओं से अपना योगदान देने के लिए कहें। विश्वास का निर्माण करने के लिए जोड़ी या समूहकार्य का प्रयोग करें ताकि आप संपूर्ण कक्षा चर्चा में हरेक को शामिल कर सकें।

- **मूल्यांकनः** रचनात्मक मूल्यांकन के लिए तकनीकों की श्रृंखला विकसित करें, इनसे आपको हरेक छात्र–छात्रा को बेहतर ढंग से जानने में मदद मिलेगी। छिपी प्रतिभाओं और खामियों को उजागर करने के लिए आपको रचनात्मक होने की जरूरत है। कतिपय छात्र–छात्राओं एवं उनकी योग्यताओं के बारे में सामान्यीकृत विचारों के कारण कुछ धारणाएं बन जाती हैं जबकि रचनात्मक मूल्यांकन आपको सटीक जानकारी देगा। तब आप उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर प्रतिक्रिया देने के लिए बेहतर स्थिति में होंगे।
- **समूह कार्य एवं जोड़ी में कार्यः** सभी छात्र–छात्राओं को शामिल करने और उन्हें एक दूसरे को महत्त्व देने के लिए प्रोत्साहित करने के लक्ष्य को ध्यान में रखकर इस बात पर सावधानीपूर्वक विचार करें कि किस तरह आप अपनी कक्षा को समूह में विभाजित कर सकते है या उनमें जोड़े बना सकते हैं। सुनिश्चित करें कि सभी छात्र–छात्राओं को एक दूसरे से सीखने और अपनी सीखी बातों पर विश्वास का निर्माण करने के लिए अवसर प्राप्त है। कुछ छात्र–छात्राओं में एक छोटे समूह में अपने विचारों को व्यक्त करने और प्रश्न पूछने के लिए आत्मविश्वास होगा किंतु हो सकता है कि संपूर्ण कक्षा के सामने उन्हें अपने को खड़ा करने में झिझक हो।
- **विशिष्टीकरणः** अलग अलग समूहों के लिए अलग अलग कार्य निर्दिष्ट करने से छात्र–छात्राओं को अपनी सीखी हुई जगह से शुरू करने और आगे बढ़ने में मदद मिलेगी। समाप्ति रहित कार्य निर्धारित करने से सभी छात्र–छात्राओं को सफल होने का अवसर प्राप्त होगा। छात्र–छात्राओं को विभिन्न कार्यों में विकल्प प्रदान करने से उन्हें उस कार्य के प्रति उत्तरदायित्व का अहसास करने और अपने अधिगम के लिए जवाबदेही लेने में मदद मिलेगी। व्यक्तिगत अधिगम आवश्यकताओं का ध्यान रखना कठिन होता है, खास तौर पर बड़ी कक्षा में लेकिन अलग अलग कार्यों और गतिविधियों का उपयोग कर इसे किया जा सकता है।

अतिरिक्त संसाधन

- Multilingual education research: http://blog.britishcouncil.org.in/towards-a-multilingual-education-research-partnership-for-india/
- Guide to language readiness in multilingual contexts (Jharkhand): https://www.academia.edu/7602970/Bhasha_Puliya_-_Guidebook_for_a_Childrens_Language_Readiness_Programme_in_multilingual_Jharkhand_India
- Bilingual dictionaries in Jharkhand:
  - https://www.academia.edu/4503737/Childrens_Bilingual_Picture_Dictionaries_-_Meri_Bhasha_mein_Meri_Duniya
  - https://www.academia.edu/4668458/Childrens_BILINGUAL_Picture_Dictionary_in_Santhali_language
- Useful websites for multilingual education in India and Asia, and globally:
  - http://www.nmrc-jnu.org/nmrc_about_us.html
  - http://www.mle-india.net/
  - http://www.unescobkk.org/index.php?id=222
  - http://www.mlenetwork.org/

संदर्भ/संदर्भग्रंथ सूची

Agnihotri, R.K. (2006) 'Identity and multilinguality: the case of India' in Tsui, A. and Tollefson, J.W. (eds) *Language Policy, Culture and Identity in Asian Contexts*. Mahwah, NJ: Lawrence Erlbaum Associates.

Agnihotri, R.K. (2007) 'Towards a pedagogical paradigm rooted in multilinguality', *International Multilingual Research Journal*, no. 1, pp. 1–10.

Agnihotri, R.K. (2009) 'Multilinguality and a new world order' in Mohanty, A.K., Panda, M., Phillipson, R. and Skutnabb-Kangas, T. (eds) *Multilingual Education for Social Justice: Globalizing the Local*. New Delhi: Orient BlackSwan.

Agnihotri, R.K. (2014) 'Multilinguality, education and harmony', *International Journal of Multilingualism*, vol. 11, no. 3, pp. 364–79.

Celic, C. and Seltzer, K. (2011) *Translanguaging: A CUNY-NYSIEB Guide for Educators*. New York, NY: The Graduate Center.

Canagarajah, A.S. (ed.) (2013) *Literacy as Translingual Practice: Between Communities and Classrooms*. New York, NY: Routledge.

García, O. (2011) *Bilingual Education in the 21st Century: A Global Perspective*. Chichester: John Wiley & Sons.

García, O., Skutnabb-Kangas, T. and Torres-Guzmán, M.E. (eds.) (2006) *Imagining Multilingual Schools: Languages in Education and Glocalization*. Clevedon: Multilingual Matters.

National Council of Educational Research and Training (undated) 'National focus group on problems of scheduled caste and scheduled tribe children' (online) NCF 2005 position paper. Available from: http://www.ncert.nic.in/html/pdf/schoolcurriculum/position_papers/position_paper_on_sc&st.pdf (accessed 18 November 2014).

National Council of Educational Research and Training (2006) 'National focus group on teaching of Indian languages' (online) NCF 2005 position paper. Available from: http://www.ncert.nic.in/html/pdf/schoolcurriculum/Position_Papers/Indian_Languages.pdf (accessed 18 November 2014).

Neaum, S. (2012) *Language and Literacy for the Early Years.* London: Sage.

Simpson, J. (2014) 'Empowering teachers by helping legitimise translanguaging practices in Rwandan classrooms', British Association of International and Comparative Education 2014 Conference, 8–10 September, University of Bath.

Skutnabb-Kangas, T. (2013) 'Mother-tongue-medium education' in Chapelle, C.A. (ed.) *The Encyclopedia of Applied Linguistics*. Oxford: Blackwell.

Suman Kumar Singh, Middle School Kauria Basanti, Bhagwanpur Hat, Siwan, Bihar

अभिस्वीकृतियाँ

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन–शेयरएलाइक लाइसेंस (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/) के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है। नीचे दी गई सामग्री मालिकाना हक की है तथा इस परियोजना के लिए लाइसेंस के अंतर्गत ही उपयोग की गई है, तथा इसका Creative Commons लाइसेंस से कोई वास्ता नहीं है। इसका अर्थ है कि यह सामग्री TESS-India के भीतर अपरिवर्तित रूप में ही उपयोग की जा सकती है और इसका उपयोग बाद के किसी भी OER संस्करणों में नहीं हो सकता है। इसमें TESS-India, OU और UKAID लोगो का उपयोग भी शामिल है।

इस इकाई में सामग्री को पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति के लिए निम्न स्रोतों का कृतज्ञतारूपी आभारः

आकृति 1: *द्विभाषी चित्र शब्दकोष*, M-TALL akhra, JTWRI, कल्याण विभाग, झारखंड सरकार से ली गई। (Figure 1: adapted from Bilingual Picture Dictionary, M-TALL akhra, JTWRI, Department of Welfare, Govt. of Jharkhand).

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत–भर के उन शिक्षक प्रशिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों और छात्र–छात्राओं के प्रति आभार प्रकट किया जाता है जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन युनिवर्सिटी के साथ काम किया।